Azim Premji University
अध्यापन कर्म,
अध्यापक की छवि व
अस्मिता
सम्पादक
शिवानी नाग
हृदय कान्त दीवान
मनोज कुमार

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कार्य-सन्तुष्टि : एक विमर्श

-प्रकृति भार्गव

यह पर्चा, लेखिका द्वारा किये गये एक शोध पर आधारित है जिसमें सरकारी शिक्षक की कार्य-सन्तुष्टि का उनके शिक्षण उद्यम पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इस लेख का पहला भाग शिक्षक कार्य-सन्तुष्टि की सैद्धान्तिक समझ पर अकादमिक विमर्श को प्रस्तुत करता है। दूसरा भाग उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के साथ किये गये साक्षात्कार पर आधारित है। इन सरकारी शिक्षकों के अनुभव पर आधारित यह विश्लेषण, शिक्षण उद्यम में वर्तमान विसंगतियों तथा भविष्य में आने वाली चुनौतियों की ओर ध्यान आकृष्ट करता है।

सार

शिक्षण-प्रक्रिया, शिक्षक तथा विद्यार्थी के पारस्परिक सम्बन्धों से निर्धारित होती है। कक्षा की शैक्षिक प्रक्रियाएँ तब और अधिक प्रासंगिक हो जाती हैं जब उन कक्षाओं में समाज के वंचित वर्गों से विद्यार्थी बड़ी संख्या में सम्मिलित होते हैं। सम्प्रति, सरकारी शिक्षण संस्थाओं का महत्त्व और अधिक हो गया है क्योंकि ये हाशिये पर खड़े व्यक्ति के लिए शिक्षा का एकमात्र अवलम्बन हैं। वर्ष 2014-15 में प्राथमिक स्तर पर सरकारी तथा निजी विद्यालयों में विद्यार्थियों के पंजीकरण का प्रतिशत क्रमशः 61.26 तथा 35.72 रहा (मेहता, 2015, पृ. 72, 74, 75)। कक्षा का वातावरण शिक्षक के व्यवहार, विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि तथा अध्यापन प्रक्रिया द्वारा निर्मित होता है। शिक्षकों की सामाजिक पृष्ठभूमि तथा उद्यम के प्रति उनका दृष्टिकोण, शिक्षकों के शैक्षिक व्यवहार को निर्धारित करने में योगदान करते हैं।

2023/3/25 17:46